वचनबद्धता का कीर्तिमान

प्रेरितों के काम परिवर्तन की पुस्तक है। इसमें निर्णय लेने ''अब आज्ञा मानने'' या यीशु की पुकार को नकारने का समय दर्ज है। यह उत्तरों के लिए और खींचने वाली परमेश्वर के अनुग्रह की सामर्थ का प्रत्युत्तर देने के लिए स्त्रियों तथा पुरुषों के पास बिनतियों की प्रेरितों की लगातार कोशिशों के बारे बताती है। पाठक इस सच्चाई से स्तब्ध रह जाता है कि यीशु की कहानी तुरन्त और तत्काल परिवर्तनों की मांग करती थी।

इस पुस्तक में किसी मध्यमार्गी अर्थात निर्णय लेने में देरी करने वाले के लिए कोई सुरक्षित स्थान नहीं, संदेही के लिए कोई सांत्वना नहीं और मध्यमार्ग ढूंढ़ने की कोशिश करने वालों के लिए कोई सहानुभूति नहीं मिलती। हर कहानी या तो पक्की वचनबद्धता या ठुकराने की तथा कई बार तो क्रोध से ठुकराने की बात भी करती है जिससे प्रचारक को प्रताड़ना सहनी पड़ती है। यह यीशु की उस बात का कि ''जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखराता है'' (मत्ती 12:30) कड़ा स्मरण है।

पहले चेलों की वचनबद्धता

यीशु के जीवन के चरम के समय प्रेरित निर्बल, घबराए हुए, अस्थिर तथा कायर थे। यीशु की गिरफ्तारी के समय, वे सभी उसे छोड़कर भाग गए थे (मत्ती 26:56; मरकुस 14:50)। पतरस दूर से ही उसके पीछे-पीछे रहा (मरकुस 14:54; लूका 22:54), परन्तु फिर उसने उसे भला-बुरा कहकर पहचानने से इन्कार कर दिया (लूका 22:60)। यूहन्ना, यूहन्ना 18:15, 16 में उल्लेखित व्यक्ति का ही नाम है, जो यीशु के साथ महायाजक के आंगन में प्रवेश करते समय बड़ा चिन्तित था, क्योंकि महायाजक उसे जानता था। बाद में, वह बाहर जाकर पतरस को अपने साथ अन्दर ले आया। परन्तु, उनमें से किसी को भी यीशु के पक्ष में बोलते या यीशु के बारे में पिलातुस के निर्णय पर आपत्ति दर्ज कराते नहीं दिखाया गया। उन्होंने न तो क्रूस को ले जाने में सहायता की और न ही यीशु की देह को गाड़ने में (लूका 23:50-53)!

लेकिन बाद में इन लोगों ने उसके जी उठने की अति उत्तम और निर्भीक गवाही दी, और ऐसा उन्होंने बड़ी सामर्थ के साथ किया (प्रेरितों 4:33)। सताये जाने पर, उन्होंने यीशु

के मसीह होने का प्रचार बड़ी दृढ़ता से करने के लिए प्रार्थना की, जबकि अभी-अभी उन्हें ऐसा न करने की आज्ञा दी गई थी (प्रेरितों 4:29)। उन्हें यीशु के नाम पर कुछ भी न कहने के लिए कहा गया था (प्रेरितों 4:18), परन्तु उन्होंने यहूदी अधिकारियों की सुनने के बजाय यीशु की बात पर ध्यान दिया (प्रेरितों 4:19, 20; 5:28, 29)।

ये प्रेरित बढ़ते अत्याचारों को सहते रहे। वे गिरफ्तार हुए और जेल में भी डाले गए, परन्तु स्वर्गदूत द्वारा छुड़ाए जाने के बाद वे फिर प्रचार करने लगे (प्रेरितों 5:18-20)। जब उनसे महासभा के सामने लाकर पूछताछ की गई, डांटा और धमकाया, फटकार लगाई गई, और अन्त में पिटाई हुई और गैर कानूनी ढंग से उन्हें कोड़े मारे गए (प्रेरितों 5:27-40) तो भी देश के उच्च पदाधिकारी यहूदियों द्वारा जनता के सामने कठोर दण्ड सहकर, और यरूशलेम की धूल भरी गलियों में घसीटे जाने पर भी, ये प्रेरित आनन्द करते हुए कि वे यीशु के नाम के कारण लज्जित होने के योग्य तो ठहरे, अपने साथी मसीहियों के पास लौट गए (प्रेरितों 5:41)! जान से मारने की धमकियों के सतावों के बावजूद, ये लोग, जो पहले मेम्ने के जैसे थे, अब निर्भय शेर बनकर जहां भी अवसर मिलता हर रोज़ यीशु का प्रचार करते थे (प्रेरितों 5:42)।

महिलाएं काफी हटकर थीं; क्योंकि वे यीशु की मृत्यु के लिए पीछे बैठकर रोती रहीं, परन्तु उन्होंने भावनात्मक कायरता नहीं दिखाई (लूका 23:27-31)। उन्होंने यीशु की कब्र को संवारा (लूका 23:55, 56) और सप्ताह के पहले दिन कब्र के स्थान पर सुबह-सुबह गईं (मत्ती 28:1)। इन महिलाओं अर्थात, यीशु की माता मरियम, मरियम मगदलीनी, शलोमी, यूहन्ना और "दूसरी मरियम" ने (शायद याकूब की माता) ने खाली कब्र को सबसे पहले देखा था (मत्ती 28:1; मरकुस 16:1, 2; लूका 24:10)।

ये महिलाएं भी पूरी निष्ठा से मथियास के प्रेरित चुने जाने के समय ऊपरी कमरे में एकत्र हुए 120 चेलों में उपस्थित थीं (प्रेरितों 1:14-26)। इसलिए, लगता है, कि यीशु के चेलों के बीच महिलाएं हमेशा उसकी परीक्षाओं, क्रूसारोहण, उसकी मृत्यु और गाड़े जाने के समय विनम्रता से पूरी तरह सहयोग देती थीं। उसके जी उठने के बाद वे ईमानदारी से वचनबद्ध रहीं और पतरस के कारावासों में से एक के समय उन्होंने महिलाओं की विशेष प्रार्थना सभाएं आयोजित कीं (प्रेरितों 12:12)।

अरमेतियाह के यूसुफ ने क्रूस पर से यीशु की लाश मांगकर उसे दफ़ना दिया। उसका चेला होना बिल्कुल ही असामान्य बात है, क्योंकि वह महासभा का एक सदस्य भी था (लूका 23:50)। "यहूदियों के डर से" उसने अपने विश्वास को गुप्त रखा था (यूहन्ना 19:38)। यीशु की देह का सार्वजनिक रूप से दावा करने से यह पक्का हो गया कि उसका चेला होना अब गुप्त नहीं रहा होगा। शव को दफनाये जाने और मसाले लगाने के लिए नीकुदिमुस ने यूसुफ की सहायता की (यूहन्ना 19:39, 40)। वह महासभा का एक सदस्य ही नहीं, बल्कि "यहूदियों का सरदार" था (यूहन्ना 3:1)। इन दोनों ने यीशु के शव को दफ़नाने में भाग लेकर बड़ी दृढ़ता से काम लिया, इसलिए यह माना जा सकता

है कि यीशु के प्रति उनकी वचनबद्धता दिखाने के बाद महासभा और यहूदी समाज में उनकी महत्ता बहुत बदल गई थी।

120 भाइयों ने, क्रूसारोहण के बाद छह सप्ताह से भी कम समय में एक दूसरे से मिलते रहकर एक दूसरे के प्रति अपने विश्वास को दिखाया (प्रेरितों 1:15)। प्रेरितों तथा महिलाओं के अलावा, यीशु के भाई भी वहां थे। पहले, मरियम के दूसरे बच्चे यीशु को मसीह नहीं मानते थे। उन्होंने यीशु को आश्चर्यकर्म करके अपने दावों को प्रमाणित करने के लिए मण्डपों के पर्व पर न जाने के लिए ठट्ठा किया था (यूहन्ना 7:1-5)। उसके सौतेले भाइयों में से एक, याकूब बाद में कलीसिया का एक प्रमुख व्यक्ति बन गया जिसने खतने की समस्या के सम्बन्ध में हुई यरूशलेम की सभा की प्रधानगी की (प्रेरितों 15:13) थी। उसका उल्लेख यरूशलेम की कलीसिया के ''खम्भे'' के रूप में भी किया गया था (गलतियों 1:19; 2:9, 12) और उसे नये नियम की एक पत्री लिखने के लिए आत्मा की प्रेरणा मिली थी (याकूब 1:1)।

यीशु की गिरफ्तारी और मुकदमों से लेकर पिन्तेकुस्त के दिन तक कई नाटकीय परिवर्तन हुए। पहले तो वे विचलित हो गए थे; परन्तु बाद में उन सब पर प्रभु यीशु का बड़ा भय (सम्मान) था (प्रेरितों 2:43)। पहले मसीही विश्वास तथा कामों में एकता दिखाते थे; एक दूसरे का स्नेहपूर्ण ध्यान रखते और तरस करते थे; और उनकी आराधना में एकता और संगति का घनिष्ट सम्बन्ध मिलता था (प्रेरितों 2:42-44)। वे अपने साथी मसीहियों की आवश्यकताओं को बलिदानपूर्वक पूरा करते थे जिसका न तो इससे पहले कोई उदाहरण मिलता था और न ही उसके बाद (प्रेरितों 2:44, 45; 4:32-35)। उनके जीवनों में कुछ ऐसा हुआ था जिससे संसार की सबसे प्रसिद्ध वचनबद्धता की ध्वनि सुनाई देती है।

दूसरों की वचनबद्धता

आइए प्रेरितों के काम में उन बहुत से साहसी लोगों को देखें जिन्होंने अपने जीवन मसीह को सौंप दिए थे। बरनबास नामक एक लेवी का कुप्रुस के टापू पर एक खेत था; और जब आरम्भिक चेलों को कुछ धन की आवश्यकता पड़ी तो उसने वह खेत बेच दिया और धन जरूरतमंदों में बांटने के लिए प्रेरितों के चरणों में रख दिया (प्रेरितों 4:36, 37)। उसने बाद में उन भाइयों के पास तरसुस के उस शाऊल की सिफारिश की जिसके खतरनाक सतावों के कारण वे भयभीत थे (प्रेरितों 9:26, 27)। स्पष्ट है कि बरनबास ने अपना जीवन प्रचार के लिए दे दिया था, क्योंकि वह प्रथम यात्रा में पौलुस के साथ था (प्रेरितों 13:2)। उस यात्रा के अन्त में, वह ख़तने की समस्या पर विचार करने के लिए यरूशलेम में पौलुस के साथ था (गलतियों 2:1); परन्तु उसे पतरस के साथ भ्रांतिपूर्ण कार्य करने के लिए ले जाया गया था जिससे पौलुस को लगा कि उन्हें डांटना चाहिए (गलतियों 2:13, 14)। बरनबास अन्ताकिया में एक प्रसिद्ध शिक्षक तथा प्रचारक (प्रेरितों 15:35) पौलुस से अलग होने के बाद अन्य मिशनरी यात्राएं भी करता रहा (प्रेरितों 15:39) क्योंकि वह, भी मसीह के प्रति वचनबद्ध था।

असाधारण शक्ति वाला एक भद्र प्रचारक स्तिफनुस, दृढ़ता और साहस के साथ प्रभु के प्रति वचनबद्ध था। वह हिंसक बन चुके यहूदियों से डरा नहीं; अपनी जान गंवाकर, भी उसने अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना की (प्रेरितों 7:54-60)।

फिलिप्पुस उन विशेष सात सेवकों में से एक था जिन्होंने चेलों में कुछ यूनानी विधवाओं की उपेक्षा की बात को सुधारने में सहायता की थी (प्रेरितों 6:1-5)। बाद में वह प्रचार करने के लिए यरूशलेम को छोड़कर सामरिया के नगर में प्रविष्ट हुआ जिसके फलस्वरूप बहुत से लोगों ने प्रभु को ग्रहण किया (प्रेरितों 8:5, 6)। एक स्वर्गदूत के कहने पर उस महान कार्य को छोड़कर उसे सुसमाचार सिखाने का एक और महान अवसर प्राप्त हुआ जब उसने कूश देश के मन्त्री के पास उसके रथ में बैठकर ''उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया'' (प्रेरितों 8:26-35)। बाद में, उसने अश्दोद में प्रचार किया और वह कैसरिया को जाते हुए सभी नगरों में प्रचार करता हुआ गया (प्रेरितों 8:40)। उसे कई वर्षों के बाद कैसरिया में, अभी भी एक सुसमाचार प्रचारक के रूप में दिखाया गया था; और उसकी चार कुंवारी पुत्रियां थीं जो भविष्यवाणी करती थीं। जब पौलुस और उसके साथी तीसरी मिशनरी यात्रा से लौटे तो उसने उनका आतिथ्य सत्कार किया था (21:8)। उसका जीवन मसीह को समर्पित था।

तरसुस का शाऊल क्रूस के विख्यात सिपाहियों में से एक था, जो अपने सारे काम निधड़क होकर करता था (प्रेरितों 9:27-29)। पहले, वह इतना ही निधड़क होकर मसीही लोगों को सताता था (प्रेरितों 7:58; 8:1; 9:21)। यीशु को मसीह मानकर उसके प्रति वचनबद्ध होने का उसका निर्णय आरम्भिक कलीसिया के इतिहास की सबसे उत्कृष्ट घटनाओं में से एक है। उसके मन को इस सच्चाई से बढ़कर कौन बदल सकता था कि यीशु मुर्दों में से जी उठकर परमेश्वर का पुत्र प्रमाणित हो गया था (रोमियों 1:4)? लूका ने लिखा कि इस सताने वाले के मन परिवर्तन के बाद, फलस्तीन के तीन राज्यों की मण्डलियों ने शांति पाई परिणामस्वरूप उसका विकास तीव्र गति से हुआ (प्रेरितों 9:31)। यीशु के साथ शाऊल की वचनबद्धता आरम्भिक कलीसिया में एक बदलाव लाई!

याफा की ''भले भले काम करने वाली'' दोरकास ने दूसरों की सम्भाल करके एक शांत और गौरवपूर्ण वचनबद्धता दिखाई। उसने प्रभु की सेवा में लोगों की सहायता करने के लिए अपने आप को अर्पित कर दिया जिससे बहुत से लोगों में उसके नाम को बड़ा आदर तथा सम्मान मिला (प्रेरितों 9:36-39)। प्रभु के प्रति उसकी वचनबद्धता के स्पष्ट प्रमाणों को उसकी मृत्यु के पश्चात उसके कामों तथा उदारता में देखा जा सकता था।

कुरनेलियुस भी ऐसा ही एक भला, भक्त आदमी था जिसके चरित्र की तुलना शायद आज भी बहुत कम लोगों के चरित्र से की जा सकती है (प्रेरितों 10:1, 2, 22)। वह प्रभु को ग्रहण करने वाला पहला अन्यजाति था, और जातिगत पूर्वधारणाओं को तोड़ने के लिए यीशु के कार्य में उसके मनपरिवर्तन की कहानी मील का एक पत्थर है।

सिरगियुस पौलुस कुप्रुस के टापू पर पेफोस में सूबा, अर्थात एक जन नेता था। इलीमास जादूगर को पौलुस के काम का धोखे और छल से विरोध करने पर उसे पौलुस द्वारा अस्थाई रूप से अन्धा होते देख उसने अपने आपको मसीह के आगे सौंप दिया था (प्रेरितों 13:6-12)।

लुदिया फिलिप्पी में आने वाली थुआतीरे की एक व्यापारी महिला थी, जो आराधना में कहीं पौलुस से मिली। पहले ही परमेश्वर की आराधक होने के कारण उसने जल्दी से सत्य को मान लिया और फिर पौलुस और उसके साथियों को अपने घर ले जाने में सफल हो गई थी (प्रेरितों 16:13-15)। उदारता तथा पहुनाई करना उसकी वचनबद्धता के प्रमाण थे।

फिलिप्पी के दरोगे का परिवार सहित मसीही बनने पर जीवन ही बदल गया था (प्रेरितों 16:27-34)। उसने तुरन्त पिटे हुए अपने कैदियों, पौलुस और सीलास की देखभाल करके पश्चात्ताप प्रकट किया। उसने उन्हें अपने घर ले जाकर उनके घाव धोये तथा उन्हें भोजन कराया।

कुरिन्थुस के आराधनालय का एक यहूदी हाकिम, क्रिस्पुस अपने साथी यहूदियों की निन्दा का विरोध करते हुए पौलुस के साथ हो लिया था। वह मसीह में बपतिस्मा लेने के अपने निर्णय में पहले तो कुछ अकेला ही लगा, परन्तु लूका के कहने का भाव है कि मसीह में उसके मनपरिवर्तन से दूसरे कुरिन्थियों ने भी विश्वास करके बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 18:8)। यह याद रखा जाना चाहिए कि आराधनालय का इस प्रकार का शासक कितना प्रसिद्ध होगा; मसीह के प्रति उसकी वचनबद्धता से कुरिन्थुस का सारा यहूदी समाज बुरी तरह से हिल गया होगा।

प्रेरितों के काम में अपुलोस नामक एक शिक्षक के बारे में भी बताया गया है जिसे और शिक्षा की आवश्यकता थी। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की शिक्षा से लेकर, वह सत्य का प्रकाश करने लगा था। कलीसिया की स्थापना के बाद, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की शिक्षा प्रासंगिक नहीं रह गई थी, क्योंकि यीशु मर चुका था और राज्य अर्थात प्रभु की कलीसिया इस पृथ्वी पर आरम्भ हो गई थी (प्रेरितों 18:24, 25)। इफिसुस में अपुलोस के काम से दर्जन भर लोग थे जिन्होंने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया था, जो कि अब वैध नहीं था। पौलुस ने उन लोगों को मसीह द्वारा दी गई आज्ञा के अनुसार मसीह में डुबकी का बपतिस्मा दिया।[1] उनकी पहले ली हुई डुबकी, अब पुरानी हो गई थी, जिससे उनको आत्मिक रूप से कोई लाभ नहीं हुआ था। पौलुस इफिसुस में यीशु के किसी भी प्रकार के चेलों को पाकर हैरान था, क्योंकि सुसमाचार को किसी भी नगर में ले जाने में आम तौर पर वही पहल करता था। जब उसे पता चला कि वे पवित्र आत्मा के विषय में कुछ नहीं जानते हैं, तो उसने उनके बपतिस्मे के बारे में पूछताछ की (प्रेरितों 19:1-7)। उसने उन बारह लोगों को सही ढंग से बपतिस्मा देकर उनके जीवनों में नया जन्म लाकर उनकी गलती को सुधारा।

जब प्रिस्किल्ला और अक्विला अपुलोस से मिले, तो उन्होंने पाया कि वह अभी भी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की पुरानी शिक्षा दे रहा है। उन्होंने उसे एक ओर ले जाकर अच्छी तरह से सिखाया, और उसने तुरन्त अपनी शिक्षा में सुधार किया। बाद में वह प्रभु के लिए एक मूल्यवान तथा ज़ोरदार प्रचारक के रूप में कार्य करता रहा (प्रेरितों 18:26-28)।

अपुलोस वचनबद्धता का एक मुख्य उदाहरण है। अपनी गलती का पता चलने पर वह बपतिस्मे के विषय में अपनी शिक्षा को बदलने के लिए तैयार था। पौलुस ने बाद में इफिसुस के मसीहियों को याद दिलाया कि उनका उद्धार ''अनुग्रह ही से'' हुआ था (इफिसियों 2:8, 9); परन्तु इफिसुस की घटना इस निष्कर्ष का समर्थन करती है कि ''अनुग्रह से उद्धार'' में बपतिस्मा लेना शामिल है, चाहे वह दोबारा बपतिस्मा लेना ही क्यों न हो। इसमें सच्चाई के प्रस्तुत करने पर पिछली गलत धारणाओं की गलती सामने आने पर शिक्षा का बदलाव भी शामिल है।

प्रिस्किल्ला और अक्विला प्रभु के काम में बार-बार दिखाई देते हैं। पौलुस के साथ उनका पहला उल्लेख कुरिन्थुस में हुआ है (प्रेरितों 18:1-3)। बाद में, वे पौलुस के साथ प्रभु के काम के लिए इफिसुस में गए (प्रेरितों 18:18, 26)। वहां रहते हुए, वे अपने पुराने परिचितों को पौलुस के साथ नमस्कार कहते हैं (1 कुरिन्थियों 16:19)। बाद में कभी उन्होंने रोम में काम किया (रोमियों 16:3), शायद रोम में पौलुस के दो वर्ष तक प्रथम कारावास के समय भी (प्रेरितों 28:30, 31)। इस विश्वासी दम्पत्ति ने इफिसुस में जाकर तीमुथियुस के साथ भी काम किया (2 तीमुथियुस 4:19)। 2 तीमुथियुस के लिखे जाने की अधिक सम्भावना पौलुस के रोमी कारावास के बाद के समय की है, इसलिए यह माना जाता है कि नये नियम में इफिसुस में अक्विला और प्रिस्किल्ला की यह अन्तिम झलक है। कई कलीसियाओं के साथ उनकी यात्राएं और मिलकर काम करने से प्रभु के काम के प्रति वचनबद्धता का एक रास्ता बन गया।

उनेसिफुरुस प्रेम रखने वाला व्यक्ति था जो पौलुस से रोम में उसकी कैद के समय मिला। पौलुस ने कहा कि जब दूसरे बहुत से लोग उसे छोड़ गए थे तो उनेसिफुरुस ने उसके ''जी को ठण्डा किया'' (2 तीमुथियुस 1:15, 16)। उनेसिफुरुस पौलुस को दिलेर करता था, जबकि अधिकांश समय यह लगता है कि पौलुस भाइयों में जाकर उन्हें उत्साहित करता था। उनेसिफुरुस को पौलुस से मिलने के लिए उसे ढूंढ़ना पड़ा, और वह पौलुस के जेल में (''मेरे बन्धनों'') होने पर लज्जित नहीं हुआ। फिर, इफिसुस में प्रभु के लिए अपनी सेवा के कारण वह प्रसिद्ध था (2 तीमुथियुस 1:17, 18)। उत्साहपूर्ण वचनबद्धता की यह एक और घटना थी।

सारांश

प्रेरितों के काम *उत्साह तथा वचनबद्धता* की पुस्तक है, समझौते और सुविधा की नहीं। यह मसीह के लिए लड़ने की पुस्तक है; और किसी *उद्देश्य के प्रति वचनबद्धता* का

भावोत्तेजक वृत्तांत भी। यीशु के पीछे चलना तो है, जिसमें कभी-कभी जान भी देनी पड़ सकती है, परन्तु इस पुस्तक में विश्वासपूर्वक यीशु के पीछे चलने को दिखाया गया है। चेलों ने विचार करके पाया कि जो बलिदान पिता ने अपने पुत्र का दिया है उससे बढ़कर और कोई बलिदान नहीं हो सकता। प्रेरितों के काम में मन परिवर्तन की प्रत्येक घटना एक बहुमूल्य वचनबद्धता थी। यीशु ने कहा था कि उसके प्रति वचनबद्ध होने के लिए पहले अपना इन्कार करना होगा (मत्ती 16:24)।

यीशु हमसे हमारी उत्तम वस्तुओं से कम कुछ भी स्वीकार नहीं करता। मिली-जुली मसीहियत अपर्याप्त है। एक हृदय को थोड़ा मसीह के प्रति और थोड़ा संसार के प्रति समर्पित नहीं किया जा सकता। संसार से मित्रता ''परमेश्वर से बैर करना है'' (याकूब 4:4)। यीशु के पीछे चलने का एकमात्र ढंग पूरे मन से अर्थात सौ प्रतिशत उसके पीछे चलना है, जिसमें पूरी तरह से और सम्पूर्ण रूप से अपने आपको उसकी सेवा के लिए दिया जा सके। पहली और सबसे बड़ी आज्ञा आज भी अपने परमेश्वर को अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखना है (मत्ती 22:37, 38)।

पाद टिप्पणियां

[1]अपुलोस का अपना बपतिस्मा स्पष्टत: वैध था, क्योंकि उसे उस समय बपतिस्मा दिया गया था जब यूहन्ना का बपतिस्मा इस्तेमाल में था। इस तथ्य से कि लूका ने अप्पुलोस के पुन: बपतिस्मा के किसी भी उल्लेख को छोड़कर उसी संदर्भ में विशेष तौर पर कहा कि बारह चेलों का पुन: बपतिस्मा हुआ यह निष्कर्ष निकल सकता है कि यूहन्ना के बपतिस्मे से उचित समय पर बपतिस्मा लेने वालों को प्रेरितों 2 में पिन्तेकुस्त के दिन पुन: बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं थी।